उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया: व्याख्या की नींव

अध्याय नौ

आधुनिक उपयोग एवं नई वाचा

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2013 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इन्टरनेशनल., पो. बॉक्स 300769, फर्न पार्क, फ्लोरिडा 32730-0769 से लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या छात्रवृत्ति के प्रयोजनों के लिए संक्षिप्त टिप्पणियों को छोड़कर किसी भी रूप में या लाभ प्राप्ति के लिए किसी भी तरह से पुन:उत्पादित नहीं किया जा सकता है।

यदि कहीं और नहीं बताया गया तो पवित्रशास्त्र की सभी टिप्पणियाँ हिन्दी की पवित्र बाइबिल से ली गई हैं। 1984 अंतर्राष्ट्रीय बाइबिल सोसायटी © सर्वाधिकार सुरक्षित। बाइबिल प्रकाशक की अनुमति के द्वारा प्रयुक्त किए गये हैं।

थर्ड मिलेनियम की मसीही सेवा के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मसीही सेवकाई एक लाभनिरपेक्ष मसीही संस्था है जो कि **मुफ्त में**, **पूरी दुनिया के लिये**, **बाइबल पर आधारित शिक्षा** मुहैया कराने के लिये समर्पित है। उचित, बाइबल पर आधारित, मसीही अगुवों के प्रशिक्षण हेतु दुनिया भर में बढ़ती मांग के जवाब में, हम सेमीनरी पाठ्यक्रम को विकसित करते हैं एवं बाँटते हैं, यह मुख्यतः उन मसीही अगुवों के लिये होती है जिनके पास प्रशिक्षण साधनों तक पहुँच नहीं होती है। दान देने वालों के आधार पर, प्रयोग करने में आसानी, मल्टीमीडिया सेमीनरी पाठ्यक्रम का 5 भाषाओं (अंग्रेजी, स्पैनिश, रूसी, मनडारिन चीनी और अरबी) में विकास कर, थर्ड मिलेनियम ने कम खर्च पर दुनिया भर में मसीही पासबानों एवं अगुवों को प्रशिक्षण देने का तरीका विकसित किया है। सभी अध्याय हमारे द्वारा ही लिखित, रुप-रेखांकित एवं तैयार किये गये हैं, और शैली एवं गुणवत्ता में द हिस्ट्री चैनल © के समान हैं। सजीवता के प्रयोग एवं शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट चलचित्र उत्पादन के लिये थर्ड मिलेनियम 2 टैली पुरस्कार जीत चुका है, और हमारा पाठ्यक्रम 150 भी ज्यादा देशों में प्रयोग हो रहा है। हमारी सामग्री डी.वी.डी, छपाई, इंटरनेट, उपग्रह द्वारा टेलीविज़न प्रसारण, रेडियो, और टेलीविज़न प्रसार का रूप लेते हैं।

हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार से उसमें शामिल हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org. पर जाएँ।

विषय-वस्तु सूची

I. परिचय 1

II. परिपूर्णता 2

क. पुराना नियम 2

ख. दोनो नियमों के बीच की समयाविधि 4

ग. नया नियम 5

III. उपयोग करना 8

क. मार्गदर्शन 9

1. पुराना नियम 10
2. नया नियम 11

ख. उदाहरण 13

IV. सारांश 17

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया:
व्याख्या की नींव
अध्याय नौ:
आधुनिक उपयोग एवं नई वाचा

परिचय

हम सभों ने यह अनुभव किया है कि हम शीघ्र भूल जाते हैं, परन्तु कई अनुभव हम पर इतना ज्यादा प्रभाव डालते हैं कि वे हमारे जीवन के अन्त तक हमारे साथ बने रहते हैं। कदाचित्, यह आपके लिए, जब आपने पहले मसीह में विश्वास किया, आपके विवाह का दिन या किसी प्यारे रिश्तेदार को खोना हो सकता है। कोई भी घटना क्यों न रही हो, जब हम इस तरह के अनुभवों में से होकर निकलते हैं, तो वे हमारे देखने के तरीके को सदैव के लिए परिवर्तित कर देते हैं। और मसीह के अनुयायियों के लिए भी यह बात सत्य है, जब हम पवित्रशास्त्र को हमारे आधुनिक संसार में हम पर लागू करते या इसका उपयोग करते हैं। यद्यपि बाइबल हमें बहुत सी बातों के बारे में बात करती है जिन्हें परमेश्वर ने किया है, परन्तु मसीह में नई वाचा का आगमन एक बहुत ही निर्णायक घटना है जो कि हमारी समझ को, जिसमें हमारे दिनों में पवित्रशास्त्र का उपयोग भी सम्मिलित है, को परिवर्तित कर देती है।

यह *उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया: व्याख्या की नींव* की हमारी श्रृंखला के ऊपर नौवाँ अध्याय है, और हमने इसे शीर्षक "आधुनिक उपयोग एवं नई वाचा" दिया है। इस अध्याय में, हम इस बात की खोज करेंगे कि कैसे मसीह में नई वाचा को उन तरीकों का मार्गदर्शन करनी चाहिए, जिनमें हम हमारे दिनों में पूरे पवित्रशास्त्र को हम पर लागू करते हैं।

पिछले अध्याय में, हमने यह शिक्षा पाई थी कि जब हम बाइबल को हमारे जीवनों में लागू करते हैं तो कैसे हमें पुराने नियम के घटनाक्रमों के विकास के युगों को स्वीकार करना चाहिए। और हमने यह देखा था कि एक कथानक में बाइबल आधारित सारे इतिहास का आधार है। बाइबल हमें शिक्षा देती है कि परमेश्वर अपने स्वर्गीय सिंहासन से अपनी अद्भुत महिमा में होकर शासन करता है, और आरम्भ से उसका लक्ष्य उसकी दृश्य महिमा को स्वर्ग से पूरी पृथ्वी के ऊपर इसकी अपेक्षा कि जो उसका विरोध करते हैं, विस्तार करे। जबकि प्राणी उसके स्वरूप में सृजे गए हैं, परमेश्वर मानव प्राणी को अभिषिक्त करता है कि वह इस पृथ्वी को भर दे और इसके ऊपर उसकी महिमा के अन्तिम प्रकटन की तैयारी के लिए राज्य करे। और जब परमेश्वर की महिमा सब स्थानों पर चमकती है, तो प्रत्येक प्राणी उसकी आराधना और स्तुति सनातन काल के लिए करता रहेगा।

हमने यह भी ध्यान दिया कि बाइबल आधारित कथानक का नाटक छह मुख्य अध्यायों, या युगों में अन्तर्निहित होते हुए विकसित हुए एक दूसरे के ऊपर संचयी तरीके से निर्मित हुए हैं: आदम, नूह, अब्राहम, मूसा, दाऊद और मसीह में नई वाचा के युगों की वाचाओं में। इन युगों में घटित हुए घटनाक्रमों के विकास की संचयी प्रकृति हमें स्मरण दिलाती है कि परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर की सेवा करने के लिए अतीत के तरीकों की ओर कभी नहीं मुड़ना चाहिए, उन्हें कभी उनके दिनों में अतीत से मिलने वाली शिक्षाओं को स्वयं पर लागू करना भी नहीं भूलना चाहिए।

इस अध्याय में, हम आधुनिक उपयोग और नई वाचा की खोज दो चरणों में करेंगे। सर्व प्रथम, हम मसीह में नई वाचा की परिपूर्णता को देखेंगे। और दूसरा, हम यह देखेंगे कि कैसे नई वाचा को आज के समय पवित्रशास्त्र को हम पर लागू करने के लिए हमारा मार्गदर्शन करना चाहिए। आइए सबसे पहले मसीह में नई वाचा की परिपूर्णता से आरम्भ करें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

परिपूर्णता

हम अक्सर विशेष अनुभवों की कल्पना करते हैं, वे कैसे होंगे, इससे पहले कि वह वास्तव में घटित हो – जैसे कि, किसी प्रतिस्पर्धा को जीतना या जीवन की एक नई अवस्था में प्रवेश करना। परन्तु कई बार, हम यह पाते हैं कि वह अनुभव स्वयं में जैसा हमने अपेक्षा की थी, उससे बिल्कुल भिन्न है। ठीक इसी तरह से, बाइबल के समयों में परमेश्वर के लोगों के लिए भी सत्य था। मसीह के आगमन से पहले, परमेश्वर ने उसके लोगों पर बहुत सी अन्तर्दृष्टियों को प्रकाशित किया, जिन्हें वह मसीह के द्वारा उन सब को पूरा करेगा। परन्तु जब मसीह में नई वाचा का अन्त में आगमन हुआ, तो ये अक्षरशः वैसी नहीं हुआ, जैसा कल्पना लोगों ने की थी।

जो कुछ हुआ उसे देखने के लिए, हम पवित्रशास्त्र में परिपूर्ण हुए नई वाचा के तीन तथ्यों को देखेंगे। सर्व प्रथम, हम उस दृष्टिकोण को स्पर्श करेंगे जो कि पुराने नियम में प्रगट होता है। दूसरा, हम उस दृष्टिकोण का वर्णन करेंगे जो कि दोनों नियमों के मध्य की समयाविधि जिसे शान्त समय या कभी कभी अन्धकार युग के नामों से भी जाना जाता है, में विकसित हुआ। और तीसरा, हम यह विवरण देंगे कि कैसे नया नियम नई वाचा की परिपूर्णता को सम्बोधित करता है। आइए सबसे पहले पुराने नियम की नई वाचा के दृष्टिकोण से आरम्भ करें।

पुराना नियम

पुराना नियम एक नई वाचा की आशा करता है जो कि परमेश्वर के उन शब्दों में से उठ खड़ी हुई है जो कि उसने भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह को कहे जब वह यरूशलेम के नाश होने के निकट समय 586 ई. पूर्व., सेवा कर रहा था।

गंभीर न्याय जो कि बाबुल की बन्धुवाई के द्वारा यहूदा पर आने के बाद भी, यिर्मयाह 31:31-35 में, परमेश्वर ने एक भविष्य के लिए महान् आशा की घोषणा की। सुनिए वहाँ पर क्या कहा गया है:

> **"सुन, ऐसे दिन आनेवाले हैं," यहोवा की यह वाणी है, "जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा बान्धूँगा... मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊँगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूँगा; और मैं उनका परमेश्वर ठहरूँगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे...क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूँगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूँगा (यिर्मयाह 31:31-35)।**

इस प्रसंग ने परमेश्वर के लोगों के लिए बहुत सी अद्भुत आशाओं को उत्पन्न किया है। जैसा कि हम यिर्मयाह 31:31 में पढ़ते हैं कि, परमेश्वर दोनों अर्थात् उत्तरी राज्य इस्राएल, और दक्षिणी राज्य यहूदा के साथ एक नई वाचा को बाँधेगा। नई वाचा असफल नहीं होगी क्योंकि, जैसा कि आयत 33 में वर्णन किया गया है, कि परमेश्वर उसकी व्यवस्था को उनके "मनों में समवाऊँगा" और उनके "हृदय पर लिखूँगा" के आदर्श को पूरा करके इसे पूरा करेगा। और साथ ही आयत 34 भी संकेत देती है, कि ये आशीषें कभी भी अन्त न होगीं क्योंकि परमेश्वर स्थाई रूप से उनके अधर्म को "क्षमा" करेगा, और उनके "पाप को फिर स्मरण" न रखेगा। जब हम नई वाचा के युग की इन आशाओं के ऊपर ध्यान देते हैं, तो इससे ज्यादा उत्तम किसी भी बात की कल्पना करना अत्यन्त कठिन है।

हमारे इस अध्याय में इस समय, हम यह देखना चाहते हैं कि कैसे पुराना नियम नई वाचा की इन आशाओं के पूर्ण होने का निपटारा करता है। परमेश्वर ने आरम्भ में जब उसने इस्राएल को बन्धुवाई से वापस आने दिया तब उन आशीषों का प्रस्ताव देने के साथ आरम्भ करने के द्वारा इन्हें प्रमाणित किया है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

जैसा कि हमने अभी अभी पढ़ा है कि, यिर्मयाह 31:31 साधारण रूप से अस्पष्ट अभिव्यक्ति के साथ आरम्भ होता है कि "ऐसे दिन आनेवाले हैं," परन्तु उस तात्कालिक पृष्टभूमि में यह अस्थायी संदर्भ अपेक्षाकृत सुनिश्चित था। यिर्मयाह 31:31-34 यिर्मयाह की पुस्तक के एक बड़े हिस्से का अंश मात्र है जिसे अक्सर पुनर्स्थापना की पुस्तक कह कर पुकारा जाता है जो कि यिर्मयाह 30:1-31:40 से विस्तारित हुआ है। इस हिस्से का नाम इसलिए ऐसा है क्योंकि यह बन्धुवाई के कई विवरणों को और बन्धुवाई के बाद आने वाली आशीषों को दुहरा देता है। सुनिए यिर्मयाह 30:3 में क्या कहा गया है, जो कि पुनर्स्थापना की पुस्तक के आरम्भ के निकट है:

> **"ऐसे दिन आते हैं," यहोवा की यह वाणी है, "जब मैं अपनी इस्राएली और यहूदी प्रजा को बंधुआई से लौटा लाऊँगा; और जो देश मैं ने उनके पितरों को दिया था उस में उन्हें फेर ले आऊँगा" (यिर्मयाह 30:3)।**

इस आयत में प्रकट ये भाव कि "ऐसे दिन आते हैं" वैसे ही हैं जैसे यिर्मयाह 31:31 में दी गई नई वाचा की भविष्यद्वाणी के आरम्भ में मिलते हैं। और इस आयत में "ऐसे दिन आते हैं" स्पष्ट रूप से उस समय के साथ जुड़े हुए हैं जब परमेश्वर उसके लोगों को "बन्धुआई से लौटा लाएगा; और उन्हें भूमि को फेर देगा।"

इस प्रकाश में, यह स्पष्ट है कि यिर्मयाह 31:31 आरम्भिक रूप से इस्राएल के प्रतिज्ञा की हुई भूमि में पुनःस्थापित होने के साथ जुड़ा हुआ है। पुराने नियम के दृष्टिकोण से, इस्राएल की पुनर्स्थापना का कार्य "अन्तिम दिनों" या "पिछले दिनों" में इतिहास के शिरो-बिन्दु या पराकाष्ठा अर्थात् समापन के समय पर घटित होगा। इसमें एक नई वाचा की स्थापना इस्राएल के बन्धुवाई से वापस लौटने, यरूशलेम और इसके मन्दिर के पुनर्निर्माण, दाऊद के अभिषिक्त पुत्र के द्वारा विश्वव्यापी शासन किए जाने, और सृष्टि के नवीकरण के समय के साथ सम्मिलित है।

यिर्मयाह 29:10-14 में, परमेश्वर ने यिर्मयाह को यह भी प्रकाशित कर दिया कि नई वाचा के इस युग के घटिन होने की अपेक्षा कब करनी चाहिए। सुनिए भविष्यद्वक्ता ने क्या कहा है :

> **यहोवा यों कहता है: "कि बाबुल के सत्तर वर्ष पूरे होने पर मैं तुम्हारी सुधि लूँगा, और अपना यह मनभावना वचन कि मैं तुम्हें इस स्थान में लौटा ले आऊँगा, पूरा करूँगा... तब उस समय तुम मुझ को पुकारोगे और आकर मुझ से प्रार्थना करोगे और मैं तुम्हारी सुनूँगा... और तुम को उन सब जातियों और स्थानों में से जिन में मैं ने तुम को बरबस निकाल दिया है, और तुम्हें इकट्ठा करके इस स्थान में लौटा ले आऊँगा जहाँ से मैं ने तुम्हें बन्धुआ करवा के निकाल दिया था, यहोवा की यही वाणी है (यिर्मयाह 29:10-14)।**

यहाँ परमेश्वर आशा का प्रस्ताव देता है जब इस्राएल "मुझ को पुकारेगा और आकर मुझ से प्रार्थना करेगा और मैं तुम्हारी सुनूँगा," तब परमेश्वर उन्हें सत्तर वर्षों के बाद इस प्रतिज्ञा किए हुए स्थान में "लौटा ले आएगा।" यह समयसारणी यिर्मयाह 25:12 में प्रकाशित की गई है।

सच्चाई तो यह है कि, 538 ई. पूर्व, परमेश्वर ने सम्राट कुस्रू को मार्गदर्शन दिया कि वह इस्राएल को प्रतिज्ञा की हुई भूमि पर लौटने का आदेश दे, इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि 2 इतिहास 36:20-22 में, इतिहास के

लेखक ने अपनी पुस्तक को यह टिप्पणी देते हुए बन्द कर दिया है कि यिर्मयाह के बन्धुवाई के सत्तर वर्ष इस समय में पूरे हो गए थे।

परन्तु उन अन्य आशीषों के बारे में क्या जो कि अन्तिम दिनों में आने वाली थीं, जो कि नई वाचा के दिन थे? दुर्भाग्य से, वे अल्पसंख्यक जो प्रतिज्ञा की हुई भूमि पर वापस लौट कर आए परमेश्वर की सेवा करने में समय समय पर असफल हो गए। परिणामस्वरूप, यिर्मयाह 31 में कही गई नई वाचा की भव्य आशीषें स्थगित कर दी गईं।

यह सुनिश्चित रूप से दानिय्येल ने दानिय्येल 9:24 में सीखा जब परमेश्वर ने उसके पास यिर्मयाह के 70 वर्षों की भविष्यद्वाणी के पूरे होने के लिए अपने वचनों को भेजा:

> **तेरे लोगों और तेरे पवित्र नगर के लिये "सत्तर" सप्ताह ठहराए गए हैं कि उनके अन्त तक अपराध का होना बन्द हो, और पापों का अन्त और अधर्म का प्रायश्चित्त किया जाए, और युग युग की धार्मिकता प्रगट हो; और दर्शन की बात पर और भविष्यवाणी पर छाप दी जाए, और परमपवित्र का अभिषेक किया जाए (दानिय्येल 9:24)।**

जैसा कि यह प्रसंग इंगित करता है कि, परमेश्वर ने अन्तिम दिनों, जो कि नई वाचा के दिन हैं, की महान् आशीषों को, "सत्तर वर्षों," के लिए स्थगित करना ठहराया है, जो कि यिर्मयाह के वास्तविक सत्तर वर्षों से सात गुणा ज्यादा का समय है। उस समय, नई वाचा की आशाएँ पूर्ण हो जाएगीं। अपराध समाप्त हो जाएगा, पाप खत्म हो जाएगा, प्रायश्चित पूरा हो जाएगा, धार्मिकता आ जाएगी, दर्शन और भविष्यद्वाणी पर मुहर लगा दी जाएगी, और परमपवित्र का अभिषेक कर दिया जाएगा।

> **जब दानिय्येल यिर्मयाह की बन्धुवाई के सत्तर वर्षों के बारे में की गई भविष्यद्वाणी के लिए प्रार्थना कर रहा था, तो वह यह प्रार्थना कर रहा था कि, "समय खत्म हो गया है, प्रभु, क्या हो रहा है?" और उसे उत्तर दिया गया कि यह मात्र सत्तर वर्ष नहीं हैं अपितु सत्तर के सात गुणा वर्ष हैं, वह भूमि जिसमें यह सब्त पाए जाते हैं, वह अन्देखापन जो कि अभी तक इनको लेकर हुआ है। कई बार यह हमें पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने की शब्दावली में सुझाव देता है कि कई बार यहाँ ऐसा आयाम है जिसमें परमेश्वर शाब्दिक रूप से वह कार्य कर रहा है जिसकी उसने प्रतिज्ञा की है, परन्तु यहाँ पर ऐसा आयाम भी है जहाँ पर इसके कुछ और ही निहितार्थ हैं जो कि बाद में कई बार भविष्यद्वाणी के रूप में सामने आते हैं। इसलिए, उदाहरण के लिए, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, आपके पास अक्सर पुराने नियम का चित्रण है जो कि पुराने नियम में उपयोग के तरीके की अपेक्षा विभिन्न तरीकों से प्रयोग किया गया है। स्पष्ट है कि प्रकाशितवाक्य उन जैसी विपत्तियों के बारे में बात नहीं कर रहा था जैसे कि मिस्र में घटित हुई थी, परन्तु हमारे पास विपत्तियों का चित्रण है जो कि प्रकाशितवाक्य में बारी बारी से इस तुलना में दुहराया गई हैं कि कैसे परमेश्वर न्याय को ला रहा है। इसलिए, हमें उनके प्रति खुला हृदय होना चाहिए जब हम पवित्रशास्त्र को पढ़ते हैं, जब हम यह पढ़ते हैं कि कैसे उत्तरोत्तर लेखक आरम्भिक लेखकों का प्रयोग कर रहे हैं। मेरे कहने का अर्थ है कि, वहाँ पर ऐसा भाव था, जिसमें बन्धुवाई के सत्तर साल ही थे, परन्तु वहाँ पर एक अन्य भाव भी था जो कि परमेश्वर के मन में था, जिसे दानिय्येल कभी भी नहीं जान सकता था यदि उसे इसके बारे में स्वर्गदूत नहीं दिखाता।**
>
> **-डॉ क्रेग एस. किन्नर**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

हमने यह देख लिया है कि पुराने नियम में, नई वाचा का पूर्ण विस्तार लोगों की अनाज्ञाकारिता के कारण स्थगित कर दिया गया था। अब आइए दोनों नियम के मध्य के अवधि की ओर मुड़ें – जो पुराने और नए नियम के बीच का समय है – और उन दृष्टिकोणों की ओर जो कि इस्राएल ने यिर्मयाह की भविष्यद्वाणी की पूर्णता के सम्बन्ध में, विशेषकर यीशु की पार्थिव सेवकाई के ठीक कुछ दिनों पहले विकसित किए।

दोनो नियमों के बीच की समयाविधि

यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए स्पष्ट है कि पहली शताब्दी में यिर्मयाह के द्वारा की गई एक नई वाचा के लिए भविष्यद्वाणी अभी पूरी तरह से पूर्ण नहीं हुई थी। नए नियम के अभिलेख और पुरातात्विक खोज यह इंगित करती हैं कि इस्राएल के लोगों के बीच विभिन्न धार्मिक समूहों में विभिन्न तरह के दृष्टिकोण थे, परन्तु वहाँ पर कुछ मौलिक विषयों के ऊपर व्यापक सहमति भी थी।

दोनों नियम के मध्य की समयावधि के अन्त में , बहुसँख्यक शास्त्रियों ने अन्तिम दिनों की आशा या नई वाचा के युग के लिए, इतिहास के दो महान् युगों के शब्दों में बोला।

सर्व प्रथम, उन्होंने आरम्भिक इतिहास और उनकी समकालीन परिस्थितियों की ओर इस या "यह युग" के रूप में संकेत किया। बन्धुवाई में परमेश्वर के लोगों के द्वारा स्पष्ट विजय ने शास्त्रियों को यह चिन्हित करने के लिए मार्गदर्शन दिया कि यह युग असफलता, दुख और मृत्यु का युग है।

दूसरे स्थान पर, शास्त्रियों ने इतिहास के दूसरे महान् युग के बारे में बात की, जो कि भविष्य की महिमा का समय, "आने वाले समय का युग" था। आने वाले युग को "अन्तिम दिनों," "परमेश्वर का राज्य," और एक नई वाचा के युग के रूप में भी जाना गया है। शास्त्रियों ने यह अपेक्षा की कि जब इस युग का आगमन होगा, तो परमेश्वर का इतिहास के लिए किया गया उद्देश्य पूर्ण हो जाएगा। वह उसके पश्चाताप किए हुए, बन्धुवाई में पड़े हुए विशाल गिनती में लोगों को, दाऊद का सिहांसन पुनर्स्थापित कर देगा, उसके राज्य को पूरी पृथ्वी पर विस्तारित करेगा, उन लोगों के ऊपर न्याय को ले आएगा जो परमेश्वर और दाऊद के पुत्र की अधीनता में आने से इन्कार कर देते हैं और पृथ्वी के अन्तिम छोर तक अब्राहम की आशीषों का विस्तार कर देगा।

इस के अलावा, इस्राएल में शास्त्रियों के एक विशाल बहुमत ने यह शिक्षा दी कि इस या यह युग से आने वाले युग में परिवर्तन निर्णायक रूप से मसीह के, जो कि दाऊद का महान् पुत्र है, के प्रगट होने पर होगा। मसीह संसार के इतिहास को एक परिवर्तित कर देने वाले भव्य स्थान के ऊपर ले आएगा, यह परिवर्तन हार से विजय की ओर, बुराई से धार्मिकता की ओर, मृत्यु से शाश्वत जीवन की ओर, और अन्धकार से एक ऐसे संसार की ओर होगा जो कि परमेश्वर की भव्य महिमा से भरा हुआ होगा।

पुराने नियम और दोनों नियम के मध्य की अवधि के दृष्टिकोणों की पृष्टभूमि को ध्यान में रखते हुए, आइए हम यह देखें कि कैसे नया नियम नई वाचा में यिर्मयाह की आशा को पूर्ण होने का वर्णन करता है।

नया नियम

हम सभी जानते हैं कि शिष्य के साथ उसके अन्तिम भोज में, यीशु ने प्याले को लिया और कहा, "यह प्याला नई वाचा का मेरा लहू है।" इसी के साथ पौलुस ने स्वयं और उसके सहकर्मियों को "नई वाचा के सहकर्मी" कह कर पुकारा। और इब्रानियों की पुस्तक यिर्मयाह 31 की ओर संकेत और पुष्टि करती है कि मसीही विश्वासी नई वाचा के युग में रहते हैं। परन्तु जब यिर्मयाह 31 दी गई नई वाचा के विवरण की तुलना हमारे दिनों में जो कुछ घटित हो रहा है, उसके साथ करते हैं, तो हम स्वीकार करते हैं कि हमें अभी भी नई वाचा की प्रतिज्ञाओं की पूर्णता को देखना है। परमेश्वर की व्यवस्था हमारे मनों और हमारे हृदयों में पूर्णता के साथ नहीं लिखी हुई हैं। कलीसिया के लोगों को अभी भी प्रभु को जानने के लिए कहने की आवश्यकता है। हमें अभी भी हमारे पापों की क्षमा को मांगने के लिए आदेश दिया गया है। इसलिए, कैसे हम नई वाचा में हो सकते हैं जबकि अभी भी यिर्मयाह की बहुत सारी

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

अपेक्षाओं का पूरा होना बाकी है? इसका उत्तर उस रहस्य में निहित है जो कि परमेश्वर ने मसीह में प्रकट किया है, कि वो कैसे वह नई वाचा की पूर्णताओं को खोलने जा रहा था।

नए नियम के विभिन्न पात्रों ने इन विषयों को विभिन्न तरह से सम्बोधित किया है। उदाहरण के लिए, यीशु ने, अपने कई दृष्टान्तों में, यह घोषणा की है कि परमेश्वर का राज्य उसकी पार्थिव सेवकाई के साथ ही आरम्भ हो गया है, जो कि समय के साथ बढ़ता जाएगा, और अन्त में अपने शिरो-बिन्दु में उस समय पहुँच जाएगा जब वह अपनी महिमा के साथ पुन: वापस आएगा।

प्रेरित पौलुस ने इन विषयों को इफिसियों 3:3-5 जैसे स्थानों में सम्बोधित, इस तथ्य की ओर संकेत करते हुए किया है कि अन्तिम दिनों का रहस्य अतीत के लोगों से छिपा कर रखा गया था, परन्तु इसे अब मसीह में प्रकाशित किया जा रहा था।

पौलुस इस रहस्य को अन्य कई स्थानों पर उल्लिखित करते हुए रोमियों 11:25 और 16:25-26 और कुलुस्सियों 1:26-27 जैसे स्थानों पर भी करता है। इनके साथ और अन्य प्रसंगों में, पौलुस मसीह में अन्तिम दिनों पर मसीही विश्वासियों के दृष्टिकोण के विभिन्न पहलुओं की ओर संकेत रहस्यों के रूप में करता है क्योंकि उन्हें पहली की पीढ़ियों से छिपा कर रखा हुआ था।

पौलुस के पत्रों में कई स्थानों पर, उसने सुसमाचार या सुसमाचार के विभिन्न पहलुओं को रहस्य शब्द, यूनानी शब्द *मिस्टीरीयोन* के रूप में बात की है। और रहस्य के द्वारा उसके कहने का अर्थ किसी तरह की कोई रहस्यमयी, अस्पष्ट बात नहीं जो कि अचानक से दृश्य पर प्रकट हो जाती है या एक पहेली नहीं है जिसे कोई समाधान नहीं कर सकता है। जैसे कि नए नियम के एक विद्वान ने वर्णित किया है कि पौलुस के लिए एक रहस्य कुछ ऐसा था जिसे परमेश्वर ने स्पष्ट दृश्य से छिपा कर रखा था, पुराने नियम के स्पष्ट दृष्टिकोण में कुछ छिपा हुआ था। और यह अब कुछ ऐसा है, जो कि मसीह के प्रकट होने के द्वारा स्पष्ट किए जाने वाले प्रकाशन के द्वारा प्रकट हो गया है, लोग पीछे मुड़ कर देख सकते हैं और कह सकते हैं कि, "अरे, वहाँ देखिए! यह वहाँ पर है।" इस तरह से, यह ऐसा कुछ नया नहीं जिसे पौलुस प्रस्तुत कर रहा है जो कि वहाँ पर न हो, परन्तु वह ऐसा कह रहा है कि, "उसे देखिए, जिसे हमने खो दिया था, वहाँ पर क्या है, उसे देखिए"... और कई अन्य तरह से, मसीह के आने के बारे में सत्य और यहूदियों और अन्यजातियों की एकता के बारे में ठीक वहाँ पुराने नियम में भजन संहिता और यशायाह में दिया गया है, परन्तु उनके इकट्ठा होने के लिए... "वहाँ देखिए, वहाँ पर क्या है; वहाँ देखिए, वहाँ पर कैसे ये सारे टुकड़े इकट्ठे हो कर ठीक आकार में आने के लिए" प्रतिक्षा कर रहे हैं, जिन्हें परमेश्वर अपनी आत्मा और नई वाचा की प्रतिज्ञायें दे रहा है, जिसके बारे में पौलुस बात करता है।

- डॉ राबर्ट एल प्लूमर

जब पौलुस इफिसियों 3 में उस रहस्य की बात कर रहा है, जिसे उसके ऊपर प्रकट किया गया है, तो वह सुसमाचार के बारे में बात कर रहा है। सुसमाचार रहस्य है। इसका अर्थ है कि यह तब तक छिपा रहता है जब तक परमेश्वर इसको हम पर प्रकट करने के लिए स्पष्ट कार्य नहीं करता है, ताकि, इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, सुसमाचार के सम्बन्ध में यह एक सार्वजनिक रहस्य है। यदि आप सोचते हैं तो, यह एक सार्वजनिक रहस्य है। परन्तु यह हम पर केवल पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के द्वारा सुसमाचार की घोषणा के द्वारा ही खोला जाता है। अब, जब पौलुस इस रहस्य के बारे में बात करता है, जैसा कि इफिसियों 3 की घटना में पाया गया है, तो कई बार वह मसीह की देह के रहस्य के बारे में बात कर रहा है जो कि सुसमाचार की घोषणा के द्वारा वास्तविकता में लाई गई है। और यहाँ पर इफिसियों 3 है जो यह कह रहा है कि, रहस्य यह है कि यहूदी और अन्यजाति एक दूसरे को प्रेम करते हैं और एक राज्य में जैविक एकता में

इकट्ठे किए गए हैं। यह आश्चर्य की बात है। इसलिए, वह कहता है कि मसीह का अगम्य धन इन असभ्य अन्यजातियों को सुनाया गया है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, एक अन्यजाति होने के नाते, मुझे प्रसन्नता है कि यह मुझ अन्यजाति तक पहुँचा। परन्तु यह एक गुप्त भेद है...वही है जो कि यहूदियों और अन्यजातियों को उसकी आत्मा की सामर्थ्य और क्रूस पर उसके लहू के द्वारा इकट्ठा करके एकता में ले आता है।

-डॉ सेन्डर्स एल. विल्सन

जिस रहस्य को परमेश्वर ने प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा प्रकाशित किया, उसने नए नियम के विद्वानों को नई वाचा के युग के एक दृष्टिकोण की ओर नेतृत्व प्रदान किया जिसे "उदघाटित युगान्तशास्त्र" या "अब, परन्तु अभी नहीं" के रूप में अक्सर वर्णित किया जाता है, भले ही हम कोई भी शब्दावली का ही क्यों न चुनाव करें, हम देखते हैं कि यीशु और नए नियम के लेखकों ने यह शिक्षा दी है कि परमेश्वर की योजना में अन्तिम दिन, नई वाचा में नए युग की पूर्णता तीन मुख्य अवस्थाओं में पूर्ण होगी।

सर्वप्रथम, नई वाचा के युग का उदघाटन् यीशु के प्रथम आगमन और उसके प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की सेवकाई में आरम्भ किया गया था। ऐसा इसलिए था क्योंकि नए नियम ने यीशु और प्रेरितों के दिनों के बारे में "अन्तिम दिनों" के रूप में बोला था। इब्रानियों 1:1-2 में हम निम्न शब्दों को पढ़ते हैं:

पूर्व युग में परमेश्वर ने बापदादों से थोड़ा थोड़ा करके और भांति भांति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें करके। इन दिनों के अन्त में हम से पुत्र के द्वारा बातें की, जिसे उस ने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उस ने सारी सृष्टि रची है (इब्रानियों 1:1-2)।

यहाँ, इब्रानियों का लेखक यीशु की पार्थिव सेवकाई और उसके पाठकों को "इन अन्तिम दिनों" के रूप में संकेत करता है। जैसा कि यह प्रसंग इंगित करता है कि, यीशु के द्वारा राज्य का उदघाटन् होना, पुराने नियम के अन्तिम दिनों की प्रतिज्ञा, का संसार के ऊपर आ जाने से था।

नया नियम जोर देता है कि नई वाचा के युग के इस उदघाटन के समय में वह सब कुछ सम्मिलित है जिसे यीशु ने उसके देहधारण, मृत्यु, पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण, और पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के समय पूरा किया। इस विशेष समय में प्रेरितों की सेवकाइयाँ और भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कलीसिया के लिए किए गए मूलभूत कार्य को भी सम्मिलित किया गया था। इफिसियों 2:19-20 में पौलुस इसे इस तरह से कहता है:

परमेश्वर का घराना, और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नेव पर [पड़ा है] जिस के कोने का पत्थर मसीह यीशु आप ही है, बनाए गए हो (2:19-20)।

दूसरा, नई वाचा के युग की निरन्तरता सम्पूर्ण कलीसियाई इतिहास में विस्तारित है। इस समय के मध्य, मसीह कलीसिया को सुसमाचार की उदघोषणा और परिवर्तन करने वाले प्रभाव के द्वारा सारे राष्ट्रों में कलीसिया का विस्तार कर रहा है।

इस लिए ही नए नियम के लेखकों ने, 2 तीमुथियुस 3:1-5 जैसे स्थानों को, कलीसियाई इतिहास की पूरी अवधि को अन्तिम दिनों के रूप में ठहराया है। सुनिए वहाँ पर क्या कहा गया है:

पर यह जान रख: कि अन्तिम दिनों में कठिन समय आएंगे। क्योंकि मनुष्य अपस्वार्थी, लोभी, डींगमार, अभिमानी, निन्दक, माता- पिता की आज्ञा टालनेवाले, कृतघ्न, अपवित्र। मयारहित, क्षमारहित, दोष लगानेवाले, असंयमी, कठोर, भले के बैरी। विश्वासघाती, ढीठ, घमण्डी, और परमेश्वर के नहीं बरन सुखविलास ही के चाहनेवाले होंगे - वे भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उस की शक्ति को न मानेंगे; ऐसों से परे रहना (2 तीमुथियुस 3:1-5)।

जिन पापों की यहाँ सूची दी गई है वे "अन्तिम दिनों" के पाप हैं जो कि पौलुस के दिनों में प्रकट हो रहे थे, और वे निरन्तर पूरे इतिहास और आज के वर्तमान दिनों में प्रकट हो रहे हैं।

पौलुस इफिसियों 3:9-10 में इस तरह के चरित्र की ओर उस समय में मसीह में प्रकाशित होने वाले एक रहस्य के रूप में संकेत देता है:

यह भेद, जो सृजनहार परमेश्वर में आदि से गुप्त... [है] अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान, उन प्रधानों और अधिकारियों पर, जो स्वर्गीय स्थानों में हैं प्रगट किया जाए (इफिसियों 3:9-10)।

इस प्रकाश में हम कलीसिया के पूरे इतिहास की सम्पूर्ण अवधि को नई वाचा के युग के रूप में समझने के लिए सही हैं।

तीसरा, नई वाचा के युग के अन्तिम दिनों अपने शिरो-बिन्दु अर्थात् पराकाष्ठा में उस समय पहुँचेंगे जब मसीह का पुन: आगमन होगा और परमेश्वर के पूरे इतिहास के लिए मूलभूत उद्देश्य पूर्ण हो जाएंगे। इसलिए ही नया नियम मसीह के पुन: आगमन को "अन्तिम दिनों" के रूप में राज्य के शिरो-बिन्दु के तौर पर वर्णित करता है। यूहन्ना 3:39 में, यीशु ने उसके शिष्यों से कहा कि:

और मेरे भेजनेवाले की इच्छा यह है कि जो कुछ उस ने मुझे दिया है, उस में से मैं कुछ न खोऊँ परन्तु उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊँ (यूहन्ना 3:39)।

यहाँ यीशु अपने शिष्यों को उसके पिता के साथ उसके सम्बन्ध के ऊपर शिक्षा देता है। उसका "अन्तिम दिन" के ऊपर उसका संदर्भ उसकी उस अन्तिम महिमा की ओर संकेत है जिसमें जब वह महिमा के साथ वापस आएगा, मृतक जी उठेंगे और परमेश्वर संसार का न्याय करेगा।

इफिसियों 1:9-10 में, पौलुस ने इस समय को एक रहस्य के रूप में वर्णित किया है जिसे परमेश्वर ने मसीह में प्रकाशित किया है। इन आयतों में, पौलुस ने समापन का इस तरह से विवरण किया है:

कि उस [परमेश्वर] ने अपनी इच्छा का भेद उस सुमति के अनुसार किया... हमें बताया, जिसे उस ने अपने आप में ठान लिया था - कि समयों के पूरे होने का ऐसा प्रबन्ध हो कि जो कुछ स्वर्ग में है, और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ वह मसीह में एकत्र करे (इफिसियों 1:9-10)।

नया नियम इंगित करता है कि, यीशु ने नई वाचा का उदघाटन उसके पहले आगमन में किया, वह निरन्तर नई वाचा को आज विश्वव्यापी कलीसिया के द्वारा प्रकाशित कर रहा है, और नई वाचा में सम्पूर्ण न्याय और आशीषें उस समय आएंगी जब मसीह राजा के रूप में सबके ऊपर उसकी महिमा सहित वापस आएगा।

मसीह में नई वाचा की पूर्णता की खोज कर लेने के बाद, हम अब हमारे इस अध्याय के दूसरे मुख्य विषय की ओर मुड़ने की स्थिति में पहुँच गए हैं जो कि: नई वाचा के युग में खुलते हुए चरित्र के ऊपर आधारित पवित्रशास्त्र का हमारा आधुनिक उपयोग अर्थात् उसे जीवन में लागू करना है।

उपयोग करना

जैसा कि हम इस अध्याय में बाद में देखेंगे, पवित्रशास्त्र के उपयोग के बारे में बहुत सी बातों को नई वाचा के युग में जीवन यापन कर रहे लोगों से कहा जा सकता है। इसमें कई असंख्य संस्कृतियों और व्यक्तिगत् बातों को ध्यान में रखना है। परन्तु इस समय, हम यह देखना चाहते हैं कि नई वाचा की तीन अवस्थाओं के बारे में नए नियम की शिक्षायें कैसे हमें बाइबल को हमारे आज के दिनों में लागू करने के लिए मार्गदर्शन देती हैं। जीवन में लागू करने के ये पहलू अपेक्षाकृत सामान्य हैं, परन्तु वे हमें ऐसे अपरिहार्य दृष्टिकोणों को प्रदान करते हैं कि कैसे हम पवित्रशास्त्र को हमारे आज के दिनों में लागू कर सकते हैं।

प्रत्येक जिसने रंगशाला में एक नाटक को मंचित होते हुए देखा है, वह जानता है कि इसका प्रदर्शन आपके दृष्टिकोण को प्रभावित करता है। एक ही जैसे पात्र और व्यवहार विभिन्न कोणों से विभिन्न तरह का दिखाई दे सकते हैं। और सम्पूर्ण प्रदर्शन की समझ के लिए सबसे उत्तम तरीका विभिन्न स्थानों से इसे एक से अधिक बार देखने में है। कई कारणों में, इसी तरह से यीशु और नए नियम के लेखकों ने मसीही कलीसिया को नई वाचा के युग में पवित्रशास्त्र को लागू करने की शिक्षा दी है। विभिन्न शिखर बिन्दुओं से पवित्रशास्त्र की जाँच करने से, हम हमारे जीवनों में बाइबल को अधिक उत्तम तरीके से लागू करने के लिए सुसज्जित हो जाते हैं।

कल्पना करें कि मसीह का एक विश्वासयोग्य अनुयायी पवित्रशास्त्र को ऐसे मंच से पढ़ रहा है जिसकी पृष्ठभूमि तीन बड़े भागों में विभाजित है। श्रोताओं के दाएँ वाले खण्ड की तरफ से, हम देखते हैं कि मसीही विश्वासी बाइबल का अध्ययन मसीह के द्वारा नई वाचा के उदघाटन की तरफ से पढ़ते हैं। श्रोताओं के मध्य वाले खण्ड की तरफ से, हम देखते हैं कि मसीही विश्वासी बाइबल को मसीह के द्वारा नई वाचा की निरन्तरता को बनाये रखे जाने की पृष्ठभूमि से पढ़ता है। और श्रोताओं के बाएँ वाले खण्ड से, हम उसे बाइबल को मसीह के द्वारा नई वाचा के शिरो-बिन्दु में पढ़े जाने को देखते हैं। इस तरह या किसी अन्य तरह से, मसीह के अनुयायियों को पवित्रशास्त्र को आधुनिक संसार में लागू किए जाने के लिए बाइबल का अध्ययन इन तीनों दृष्टिकोणों को अपने ध्यान में रखते हुए करना चाहिए।

दूसरे शब्दों में, जब बाइबल का अध्ययन किया जाए, तो विश्वासियों को पवित्रशास्त्र के प्रत्येक वचन को जो कुछ मसीह ने नई वाचा में पहले से ही उदघाटित कर दिया है और उस सब कुछ को जिसे मसीह ने उसकी पार्थिव सेवकाई के मध्य में हमारे लिए पूरा कर दिया है, से सम्बन्धित करने की आवश्यकता है। परन्तु, हमें पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं को नई वाचा के युग की निरन्तरता में और हमारे जीवन में पवित्रशास्त्र के महत्व की खोज के आलोक में करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त, यह महत्वपूर्ण है कि हम पवित्रशास्त्र को हमारे युग में मसीह जो कुछ शिरो-बिन्दु में पूरा करेगा, के प्रकाश के द्वारा और हमें मसीह के भव्य महिमामयी पुन: आगमन की तत्परता में जीवन व्यतीत करना चाहिए।

नई वाचा के उपयोग के ऊपर इन तीन दृष्टिकोणों की हम कई तरीकों से खोज कर सकते हैं, परन्तु हम केवल दो ही महत्वपूर्ण बिन्दुओं के ऊपर स्पर्श करेंगे। सर्व प्रथम, हम नई वाचा के युग के उपयोग के लिए कुछ साधारण मार्गदर्शनों को सारांशित करेंगे। और दूसरा, हम उपयोग के लिए एक ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करेंगे जो कि इन रणनीतियों को प्रदर्शित करेगा। आइए कुछ साधारण मार्गदर्शन से आरम्भ करें।

मार्गदर्शन

पिछले किसी एक अध्याय में हमने प्रक्रिया की परिभाषा निम्न तरीके से दी थी:

बाइबल के एक दस्तावेज के मूल अर्थ को उचित रूप से समकालीन श्रोताओं के साथ इस तरीके से सम्बन्धित करना कि वह उनकी अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं को प्रभावित करे।

जैसा कि यह परिभाषा संकेत करती है कि, पवित्रशास्त्र के प्रत्येक उपयोग में उचित रूप से मूल अर्थ को समकालीन श्रोताओं के साथ सम्बन्ध सम्मिलित है।

सर्वप्रथम, हमें बाइबल के एक प्रसंग के मूल अर्थ को उन तरीकों के द्वारा पहचान करने की आवश्यकता है जिसके द्वारा बाइबल के लेखकों ने उनके मूल श्रोताओं की अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं को प्रभावित किया है। तब फिर, हम इस मूल अर्थ को समकालीन श्रोताओं के ऊपर यह निर्धारित करते हुए लागू कर सकते हैं कि कैसे यह आज के लोगों की अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं को प्रभावित करना चाहिए। जैसा कि हमने किसी एक अन्य अध्याय में देखा था, कि जब हम पवित्रशास्त्र का उपयोग करते हैं, तो युगों में हुए घटनाक्रमों के विकास को ध्यान में रखना अत्यन्त महत्वपूर्ण है, क्योंकि पवित्रशास्त्र का प्रत्येक प्रसंग उन लोगों को लिखा गया था जो कि हमारे अपने युग की अपेक्षा बाइबल के विश्वास की अवस्थाओं में जीवन यापन कर रहे थे। इसलिए, हमारे अध्याय में इस समय हम, हमारे ध्यान को युगों में हुए घटनाक्रमों के विकास के उन तरीकों के ऊपर लगायें जो कि पवित्रशास्त्र के मूल श्रोताओं को नई वाचा के युग में जीवन यापन करते हुए समकालीन श्रोताओं के साथ सम्बन्धित करते हैं।

यह देखने के लिए हमारे ध्यान में क्या है, हम दो दिशाओं की ओर संक्षेप में देखेंगे। सर्व प्रथम, हम पुराने नियम के प्रसंगों में दी हुई नई वाचा के उपयोग के बारे में कुछ साधारण टिप्पणियाँ देंगे। तब दूसरा, हम ऐसा नए नियम के साथ भी करेंगे। आइए सबसे पहले पुराने नियम से आरम्भ करें।

पुराना नियम

जैसे कि हमने पिछले अध्याय में देखा, पुराना नियम बाइबल के इतिहास की छह मुख्य वाचाओं की ओर संकेत करता है, परन्तु पुराने नियम के लेख इनमें से केवल दो युगों में ही लिखे गए: मूसा और दाऊद की वाचाओं के युगों में। प्रत्येक पुराने नियम का प्रसंग मूसा या दाऊद की वाचा के युग में रहने वाले लोगों की आवश्यकताओं को सम्बोधित करने के लिए रूपरेखित किया गया था। जैसा कि, पुराने नियम के प्रसंग मूल रूप से परमेश्वर के लोगों को अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं की निश्चित सूची से अवगत कराने के लिए दिए गए थे जो कि इन दो वाचा के युगों के धर्मवैज्ञानिक विकासों के लिए उचित थे।

इसी कारण से, नई वाचा के युग के लिए पुराने नियम के प्रसंगों से अर्थ के साथ सम्पर्कों को निर्मित करना आवश्यक है। मसीह के अनुयायी होने के नाते, हम जानते हैं कि इस प्रक्रिया में नया नियम ही केवल एकमात्र अकेला अचूक मार्गदर्शक है। परिणामस्वरूप, नए नियम के उन तरीकों को देखना अत्यन्त आवश्यक है जिनमें लेखकों ने नए नियम को नई वाचा की सभी तीनों अवस्थाओं में पुराने नियम को लागू किया। उदाहरण के लिए, नया नियम हमें बहुत से ऐसे उदाहरण देता है जिनमें मसीह ने उसके पहले आगमन में पुराने नियम की शिक्षाओं को पूरा किया। यह हमारे ध्यान को उन तरीकों की ओर आकर्षित करता है जिसमें मसीह ने निरन्तर पुराने नियम की शिक्षाओं को निरन्तर चलने वाली अवधि के मध्य में पूर्ण किया। इसके अतिरिक्त, नया नियम उन तरीकों की ओर भी संकेत करता है जिनमें मसीह पुराने नियम की शिक्षाओं को नई वाचा के शिरो-बिन्दु पर पूरा करेगा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

सबसे महत्वपूर्ण बाइबल आधारित विषयों में से एक विषय परमेश्वर का राज्य है, और तौभी यह विशेष वाक्यांश केवल नए नियम में ही प्रकट होता है। चाहे कुछ भी क्यों न हो, हम इसे पुराने नियम में प्रत्येक स्थान पर देखते हैं, विशेषकर अभिनन्दन से सम्बन्धित भजन संहिता में कि, "प्रभु राज्य करता है।" नए नियम के लेखकों ने पुराने नियम के विषयों को मसीह के आगमन के प्रकाश में लिया है, और इस तरह से जैसा कि सुसमाचार के प्रचारकों ने यीशु की शिक्षाओं को सारांशित किया है, उन्होंने परमेश्वर और स्वयं यीशु के राज्य के बारे में बात की है क्योंकि उसके शब्द इन बातों के बारे में अभिलिखित मिलते हैं कि कैसे स्वर्ग का राज्य आ पहुँचा था। और इसलिए, यहोवा के राज्य को उसके लोगों और राष्ट्रों के बारे में जो बात करता हैं वह अब ख्रिष्ट अर्थात् मसीह, जो दाऊद का पुत्र है, के संदर्भ में सन्निहित है, जो कि इस्राएल के मंच के ऊपर आ पहुँचा है... हमें इसे दोनों संदर्भों में अर्थात् कैसे मसीह स्वर्गारोहित हुआ और कैसे वह प्रेरितों के काम अध्याय 1 में सिहांसन से राज्य करता है, में देखते हैं, जैसा कि वह स्वर्गारोहित हुआ है और उसके पुनरूत्थान का प्रचार किया गया है और लोग पुनरूत्थित और स्वर्गारोहित मसीह के पास खिंचे चले आए हैं, परन्तु इसी के साथ यहाँ पर प्रभु के भविष्य में आने वाले दिन के बारे में भाव है कि मसीह एक दिन पुन: वापस आएगा। जैसा कि प्रेरितों के काम अध्याय 1 हमें कहता है कि, वह जिस तरीके से ऊपर गया है उसी तरीके से वापस नीचे एक दिन आएगा, और वहाँ पर अभी भी परमेश्वर के लोगों को अन्तिम रूप से निर्दोष ठहराया जाना होगा जब उनकी जाँच शैतान को छोड़े जाने के द्वारा अन्तिम धोखे और विद्रोह से की जाएगी, परन्तु इसी के साथ जब मसीह वापस आएगा और वह सबसे अन्त में शैतान की सारी युक्तियों के ऊपर विजय को प्राप्त करेगा।

- डॉ ग्रेग पैरी

आकर्षक चीजों में से देखने के लिए सबसे उत्तम बात वह तरीका है जिसमें सुसमाचार ने यीशु को पुराने नियम के विषयों में चित्रित किया है। हम इसे कई विभिन्न स्थानों में देखते हैं। मुख्य स्थानों में से एक जिसे हम देखते हैं वह यह है कि हम यीशु को वास्तव में मूसा के स्थान पर चित्रित होता हुआ पाते हैं। वह कई अर्थों में द्वितीय मूसा है जो कि एक नए द्वितीय और महान् निर्गमन का नेतृत्व करने के लिए आ रहा है। कई उदाहरण हमारे ध्यान में आते हैं जब हम यीशु के बारे में उसे द्वितीय मूसा होना सोचते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं है, कि उनमें से एक विचार, उसके पानी के बपतिस्मे के अनुभव के बाद सीधे जंगल में जाने के बारे में है। इस तरह से, जब वह यरदन नदी में बपतिस्मा लेता है, तो एक अर्थ में, यह बिल्कुल उसी पानी की तरह है जब इस्राएली लाल समुद्र से पार हुए थे और वे वहाँ से तुरन्त जंगल की ओर चले गए थे। जंगल में उसने इस्राएलियों की तरह परीक्षाओं का सामना किया, परन्तु वह एक विश्वासयोग्य पुत्र है, जबकि इस्राएल अनाज्ञाकारी पुत्र था। जंगल के उस अनुभव में, यीशु नए निर्गमन का एक विजयी नेता हो कर प्रकट होता है जिस कारण वह वहाँ से आता है और फिर मत्ती 5 में पहाड़ी उपदेश में नई व्यवस्था को देता है जहाँ पर यीशु को एक नई व्यवस्था देने वाले के रूप में चित्रित किया गया है...इस तरह समय समय पर आप सुसमाचारों और पुराने नियम के मध्य इस सामन्जस्य और एकता को देखते हैं, और यह कि यीशु एक कहानी को अन्त कर रहा है जो कि वर्षों पहले आरम्भ हुई थी।

-डॉ माईकल जे. क्रूगेर

लागू अर्थात् उपयोग करने के लिए पुराने नियम के प्रसंगों के इन मूलभूत नमूनों को ध्यान में रखते हुए, आइए हम नई वाचा के युग में नए नियम के प्रसंगों को उपयोग करने की ओर मुड़ें।

नया नियम

पहली नजर में देखने से, ऐसा प्रकट होता है कि जब मसीही विश्वासी नए नियम को लागू करते हैं तो उन्हें युगों में घटित हुए घटनाक्रमों के विकास पर ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि नया नियम नई वाचा के युग में लिखा गया था। परन्तु हमें इस बात को ध्यान में रखना अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि सम्पूर्ण नया नियम नई वाचा के उदघाटन की अवस्था के मध्य में संकलित हुआ था। आज, हम उस अवस्था में नहीं रह रहे हैं। इसकी अपेक्षा, हम नई वाचा की निरन्तरता में जीवन यापन कर रहे हैं। इसलिए, हमें इस युगान्तकारी विभिन्नता को जब हम नए नियम को हमारे जीवनों में लागू करते हैं तो ध्यान में रखने की आवश्यकता है।

नए नियम की पुस्तकें कलीसिया के मूलभूत अगुवों के हाथों से हम तक आई हैं और आरम्भ में वे उन लोगों के लिए लिखी गई थीं जो कि नई वाचा के युग के उदघाटन के समय में जीवन यापन कर रहे थे। जो कुछ इन लेखकों ने लिखा उनके हमारे लिए कई निहितार्थ हैं जबकि हम नई वाचा के युग की निरन्तरता में जीवन यापन कर रहे हैं। इसलिए, यद्यपि हम इन लेखों के लिखे जाने के हजारों वर्षों बाद रह रहे हैं, तौभी इनका हमारे ऊपर निर्विवाद अधिकार है।

हमारे आज के जीवनों और जब नया नियम लिखा गया था उस समय के जीवन के मध्य की कुछ भिन्नताओं के ऊपर थोड़ा सा ध्यान दें। उदाहरण के लिए, आज के विपरीत, मार्गदर्शन के लिए निवेदन परोक्ष में व्यक्तिरूप से प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं से किया जा सकता था जो कि उस समय रह रहे थे। हम इसे फिलेमोन की पुस्तक में देखते हैं। इसके अतिरिक्त, कलीसिया के मूलभूत अगुवों के पारस्परिक वार्तालाप के द्वारा प्रचलित मुद्दों के ऊपर निर्णय लिए जा सकते थे, जैसा कि हम प्रेरितों के काम अध्याय 15 में यरूशलेम की महासभा में देखते हैं। परन्तु हमारे दिनों में, हमारे पास हमारे मध्य में ये मूलभूत अधिकारीगण नहीं रहे हैं। इसलिए, हमें हमारे मार्गदर्शन के लिए सहायता प्राप्त करने के लिए नए नियम में उनके दिए हुए उपदेशों की शिक्षाओं के ऊपर निर्भर रहना होगा।

इसके अतिरिक्त, नया नियम आश्चर्यकर्म और अलौकिक घटनाओं के कई उदाहरणों को प्रस्तुत करता है। यीशु और उसके प्रेरितों और भविष्द्वक्ताओं को ऐसी घटनाओं को प्रदर्शित करने के द्वारा स्वयं के अधिकार को स्थापित करने के लिए विशेष वरदान दिए गए थे। जबकि वह उस समय सत्य था, अधिकार आज के दिनों में केवल स्वयं नए नियम के मापदण्ड के ऊपर आधारित है। यदि हम इस भिन्नता को भूल जाते हैं, तो हम अक्सर हमारे दिनों में झूठी आशाओं को प्राप्त करेंगे। यह सुनिश्चित करने के लिए, परमेश्वर नई वाचा की निरन्तरता में उसकी कलीसिया के मध्य में आश्चर्यकर्मों को चलाए रखता है, परन्तु हमें इस खोज से निराश नहीं हो जाना चाहिए कि इस युग में ऐसी घटनायें उस आवृत्ति में नहीं घटित होंगी जैसे उस समय घटित हुई जब मसीह और उसके प्रेरित इस पृथ्वी के ऊपर जीवन यापन कर रहे थे।

इसके अतिरिक्त, नए नियम के लेखकों ने स्वयं को मूल रूप से सैद्धान्तिक और व्यवहारिक मुद्दों के लिए समर्पित कर दिया था जो कि नई वाचा के उदघाटन के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण थे। उदाहरण के लिए, शायद ही कोई ऐसा मुद्दा हो जिसने नए नियम में परमेश्वर के राज्य की यहूदी नींव से अन्यजाति संसार में विस्तार होने से ज्यादा ध्यान को आकर्षित किया हो। नए नियम में एक के बाद एक विवाद को सम्बोधित किया गया है कि कैसे मसीह के अनुयायियों को इससे निपटना चाहिए और कैसे पुराने नियम की प्रथाओं और अतिरिक्त यहूदी परम्पराओं का पालन नहीं करना चाहिए। जबकि यह सत्य है कि इन शिक्षाओं के निहितार्थ आज की कलीसिया के लिए भी हैं, परन्तु मसीह की कलीसिया इन मौलिक विवादों से बहुत आगे चली गई है। जब सुसमाचार पूरे संसार में विस्तारित होता जा रहा है, तो हम भिन्न तरह के मुद्दों का सामना कर रहे हैं।

मैं कई बार आशा करता हूँ कि मैं प्रेरितों के युग में पीछे की ओर चला जाता और प्रेरितों के द्वारा प्रचार और आश्चर्यकर्मों की सेवा का गवाह होता जिन्हें उन्होंने प्रदर्शित किया और हर वह बात जिन्हें उन्होंने कलीसिया के जीवन में परिचित कराया। और इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, आरम्भ की कलीसिया के बहुत सारे अनुभव हमारे आज के दिनों के संसार से मिलते जुलते ही हैं। मेरे कहने का अर्थ है कि, संसार में कई स्थानों पर कलीसिया को सताया जा रहा है, और हम उसी सुसमाचार को पकड़े हुए हैं जिन्हें प्रथम विश्वासियों ने पकड़ा था। परन्तु यहाँ पर ऐसा भाव भी है जिसमें प्रेरितों की वह सेवकाई कलीसिया के उस विशेष अवधि में विशेष थी, हम उनकी नींव के ऊपर पवित्रशास्त्र के पठन् के द्वारा निर्मित करते हैं,

जिन्हें उन प्रेरितों ने उत्पन्न किया था। परन्तु प्रेरितों का पद कलीसिया के जीवन में निरन्तर बना रहने वाला पद नहीं था। यह एक अद्वितीय मूलभूत सेवकाई है जिसे एक बार दिया गया था और अब हम उनकी नींव के ऊपर आज कलीसिया में निर्माण करते हैं।

-डॉ फिलिप्प रेयकेन

इस कारण से, जब हम नए नियम को आधुनिक संसार में लागू करते हैं, तो समझना अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि मूल अर्थ नई वाचा के युग के उदघाटन की अवस्था में दृढ़ता से आधारित है। मूल अर्थ के इस प्रकाश को अपने ध्यान में रखते हुए, हम नई वाचा के युग के मध्य में घटित हुए घटनाक्रमों के आगे के विकास को ध्यान में रखते हुए इसे तब हमारे स्वयं के समय में लागू कर सकते हैं।

पुराने और नए नियम दोनों में नई वाचा के उपयोग के लिए दिए गए साधारण मार्गदर्शनों को देख लेने के बाद, आइए हम पवित्रशास्त्र के एक ऐसे उदाहरण के ऊपर ध्यान दें जो कि इन सिद्धान्तों को प्रदर्शित करता है। हम बाइबल का मल्लयुद्ध अर्थात् लड़ाई के ऊपर दिए हुए जोर को हमारे इस उदाहरण के लिए प्रयोग करेंगे।

उदाहरण

बाइबल के साथ परिचित हर कोई यह जानता है कि यह बहुत ज्यादा ध्यान बुरी आत्माओं और वे राष्ट्र जो इनका अनुसरण करते हैं, के विरूद्ध मल्लयुद्ध के ऊपर केन्द्रित करती है। पुराने नियम की प्रत्येक पुस्तक इस तरह या किसी अन्य तरह से इस विषय को स्पर्श करती है। और नया नियम निरन्तर संकेत देता है कि बुराई के विरूद्ध पुराने नियम का युद्ध निरन्तर नई वाचा के युग में चलता रहता है।

पुराने नियम में हम अक्सर देखते हैं कि, परमेश्वर को एक योद्धा, एक योद्धा राजा, एक सैन्य नायक के रूप में चित्रित किया गया है। मेरे कहने का अर्थ है कि, हमारे संदर्भ में इसके बहुत ज्यादा अर्थ भले ही न हो, हम इसे पूरी तरह से नहीं समझते हैं। परन्तु प्राचीन इस्राएल के जीवन की वास्तविकता में लड़ाई एक सामान्य बात थी...फिरौन परमेश्वर के लोगों को जाने नहीं दे रहा था, इसलिए परमेश्वर ने क्या किया...वहाँ सबसे पहले विपत्तियाँ आई, परन्तु फिर अन्त में परमेश्वर उनकी तरफ से लाल समुद्र में मिस्रियों की सेना को डुबोने के द्वारा लड़ने वाला ठहरा। इस तरह से, एक और उदाहरण को देखिए। तब मूसा और मरियम ने परमेश्वर की स्तुति में गीत गाया: रथ और उनके सवार...घोड़े और उनके सवारों को उसने लाल समुद्र में डुबा दिया। इस तरह से परमेश्वर को एक योद्धा के रूप में गाया गया। और निश्चित ही हम देखते हैं कि, इस्राएल के राष्ट्र होने के नाते कनानियों की भूमि की ओर चलता है, और परमेश्वर उनकी तरफ से लड़ रहा है...

- डॉ डेविड टी. लैंब

इस विषय की विशिष्ठता एक महत्वपूर्ण प्रश्न को उत्पन्न करती है। कैसे हमें इसे आज के हमारे दिनों में लागू करना चाहिए? जो कुछ हम पुराने नियम या नए नियम में पढ़ते हैं, यदि हमें हमारे जीवनों में इस विषय को लागू करने के लिए पूर्ण चित्र को प्राप्त करना चाहते हैं, तो हमें मसीह में नई वाचा के युग की तीन अवस्थाओं के आलोक में इसे अवश्य देखना चाहिए।

सबसे पहले स्थान पर, हमें हमारे ध्यान को हमारे युग के उदघाटन के ऊपर केन्द्रित करना चाहिए। नया नियम स्पष्ट करता है कि इस संसार में बुराई के विरूद्ध मल्लयुद्ध के विषय के कुछ पहलू विशेष रूप से यीशु की पार्थिव सेवकाई में पूरे हो चुके हैं। यीशु ने स्वयं संकेत किया है कि उसकी सेवकाई में उसके शिष्यों के साथ बुराई के ऊपर विजय के प्रति क्या कुछ घटित हो रहा था।

उदाहरण के लिए, लूका 10:18-19 में, हम यीशु के उसके शिष्यों को दिए गए उत्तर को पढ़ते हैं जब वे दुष्ट आत्माओं को निकाल कर उसके पास वापस आए।

उस ने उन से कहा; मैं शैतान को बिजली की नाईं स्वर्ग से गिरा हुआ देख रहा था। देखो, मैंने तुम्हे सांपों और बिच्छुओं को रौंदने का, और शत्रु की सारी सामर्थ्य पर अधिकार दिया है; और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी (लूका 10:18-19)।

इसी के साथ, कुलुस्सियों 2:15 के अनुसार, यीशु ने आत्मिक शक्तियों को क्रूस के ऊपर उसकी मृत्यु के द्वारा हरा दिया है:

और उस [यीशु] ने प्रधानताओं और अधिकारों को अपने ऊपर से उतार कर उन का खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के कारण उन पर जय-जय-कार की ध्वनि सुनाई (कुलुस्सियों 2:15)।

इसी तरह से, इफिसियों 4:8 में, पौलुस मसीह के पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण को युद्ध में हुई उसकी विजय की ओर संकेत करता है।

इसलिये वह कहता है, कि वह ऊँचे पर चढ़ा, और बन्धुवाई को बान्ध ले गया, और मनुष्यों को दान दिए (इफिसियों 4:8)।

इनके साथ और अन्य ऐसे प्रसंगों के आलोक में, जब कभी भी हम परमेश्वर के शत्रुओं के विरूद्ध लड़ाई के विषय को पुराने या नए नियम में पाते हैं, तो हमें यह बात अवश्य ध्यान में रखनी चाहिए कि कैसे मसीह ने उसकी भूमिका को नई वाचा के युग के उदघाटन के मध्य पूरा किया। इसके अतिरिक्त ऐसा क्या है जिसे मसीह ने पहले से ही पूरा कर लिया है, जबकि पाप और मृत्यु की शक्ति के ऊपर अन्तिम विजय के लिए कोई आशा बाकी नहीं रह गई है।

उसके पहले आगमन के समय मसीह ने लड़ाई को प्रदर्शित किया, या लड़ाई को पूरा कर दिया, या जिसे शैतान के साथ हुई लड़ाई में चित्रित किया जा सकता है। और यह उत्पत्ति 3:15 में आरम्भ हुई थी जहाँ पर परमेश्वर ने आदम और हव्वा को बिल्कुल आरम्भ में ही और पतन के समय प्रतिज्ञा कर दी थी कि एक छुटकारा देने वाला आएगा। और हम इसे क्रूस में घटित होता हुआ देखते हैं। शैतान का सिर कुचल दिया गया, यीशु की एड़ी को काटा गया, डसा गया था – जो भी शब्द आप इसके लिए उपयोग करना चाहते हैं और शैतान के ऊपर अन्तिम विजय को प्राप्त कर लिया गया था।

- डॉ हावर्ड आईरिच

बहुत से विश्वासी ऐसा सोचते हैं कि मसीह बुराई को तब तक नाश नहीं करेगा जब तक वह पुन: वापस अन्तिम समय में नहीं आ जाता। परन्तु सच्चाई यह है कि यीशु मसीह ने बुराई को उसके प्रथम आगमन पर ही विलुप्त कर दिया था। हम कह सकते हैं कि उसने बुराई को सैद्धान्तिक रूप से विलुप्त कर दिया था, इसका अर्थ है कि उसने इबलीस को क्रूस के ऊपर हरा दिया था और अन्तिम रूप से दूसरे

आगमन की नींव को रख दिया था। अभी भी संसार में बुराई विद्यमान है, और हम अभी भी इसमें रहते हैं, परन्तु यह वह बुराई है जो कि नाश होने की कगार की सड़क पर है। हमारे प्रभु यीशु मसीह की लड़ाई में, उसने "शक्तियों और हाकिमों को निरस्त्र कर दिया है, और उनका सार्वजनिक तमाशा बनाते हुए, उनके ऊपर जय को प्राप्त किया है," और इबलीस के कार्यों के ऊपर एक महान् विजय को अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा प्राप्त किया है।

- डॉ घेशान खालेफ, अनुवादित किया हुआ

हमारे युग के उदघाटन के अतिरिक्त, जहाँ कहीं भी पवित्रशास्त्र में हम लड़ाई के विषय का सामना करते हैं, हमें नई वाचा के युग की निरन्तरता में इसे लागू करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

यद्यपि मसीह स्वयं ने उसके प्रथम आगमन के समय बुराई की अन्तिम हार को आरम्भ किया, नया नियम शिक्षा देता है कि यह मल्लयुद्ध कलीसिया के पूरे इतिहास में प्रत्येक विश्वासी के अनुभव का भी आवश्यक हिस्सा रहेगा।

उदाहरण के लिए, 2 कुरिन्थियों 10:4 में, पौलुस पुष्ट करता है कि सुसमाचार का विस्तार बुरी आत्माओं के विरूद्ध मल्लयुद्ध है। वहाँ पर वह ऐसा कहता है कि:

क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं (2 कुरिन्थियों 10:4)।

पौलुस कलीसिया की लड़ाई अर्थात् मल्लयुद्ध को भी इफिसियों 6:12 में इन्हीं तरीके से संकेत करता है:

क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं (इफिसियों 6:12)।

ध्यान दीजिए इन दोनों प्रसंगो में जिस लड़ाई को हम मसीही विश्वासी होने के नाते लड़ते हैं, उसका स्वभाव आत्मिक है। जैसे यीशु ने हमारे युग के उदघाटन के समय किया था, हम "माँस और लहू" के साथ लड़ाई नहीं करते हैं। हम "प्रधानों" और "अधिकारियों" के विरुद्ध लड़ाई लड़ते हैं, अर्थात् "दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।" मसीह के राज्य की निरन्तरता के मध्य, हमारी लड़ाई, लोगों की अपेक्षा, शैतान और अन्य बुरी आत्माओं से हैं जो कि इस संसार में कार्यरत् हैं। 2 कुरिन्थियों 5:19-20 में पौलुस के कुछ शब्द इस तरह से लिखे हुए हैं:

अर्थात् [परमेश्वर] ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप कर लिया, और उन के अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया और उस ने मेल मिलाप का वचन हमें सौंप दिया है। सो हम मसीह के राजदूत हैं; मानो परमेश्वर हमारे द्वारा समझाता है: हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं, कि परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कर लो (2 कुरिन्थियों 5:19-20)।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

परमेश्वर के लोग होने के नाते जो कि नई वाचा की निरन्तरता के मध्य जीवन व्यतीत कर रहे हैं, हम हमारे साथ रहने वाले मानव प्राणियों के प्रति लड़ाई का काम नहीं कर रहे हैं। इसकी अपेक्षा, हम "मसीह के राजदूत" हैं जो मसीह के सुसमाचार के माध्यम से पाप के राज्य से मानव प्राणियों को बचाने की इच्छा करते हैं। हम शैतान के राज्य को, लोगों से यह निवेदन करते हुए हराते है के वे "परमेश्वर के साथ मेल मिलाप" कर लें।

इसलिए, 2 कुरिन्थियों 2:14 में दी हुई बात हमें आश्चर्य में नहीं डालती है जहाँ पौलुस मसीह की विजय के जुलूस को सुसमाचार की सेवकाई के द्वारा भी वर्णित करता है:

> **परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो मसीह में सदा हम को जय के उत्सव में लिये फिरता है, और अपने ज्ञान का सुगन्ध हमारे द्वारा हर जगह फैलाता है (2 कुरिन्थियों 2:14)।**

चाहे हम पुराने नियम या नए नियम से लड़ाई या लड़ाई के उदाहरणों को रेखांकित करें, मसीह के अनुयायियों को सदैव इस विषय को नई वाचा की निरन्तरता में होने वाली उनकी प्रतिदिन की सेवकाई में लागू करने कि लिए तैयार रहना चाहिए।

> **मसीह आज कलीसिया के द्वारा बुराई के विरुद्ध चल रही लड़ाई को विभिन्न तरीकों से पूरा करता है, परन्तु इस पर विचार करने के लिए प्रमुख श्रेणी यह है कि मसीह का राज्य हमारी राज्यों के प्रति सामान्य सोच की अपेक्षा भिन्न आदेश में निर्मित है। यह यीशु के दिनों में सत्य था जब वे लोग जिन्होंने उसे गलत समझ लिया कि वह एक राजनैतिक राज्य की स्थापना करने आया था, और ऐसा ही आज के दिनों में है जब, हम हमारे राष्ट्रीय या जातीय या सामाजिक आर्थिक हितों पर आधारित होते हुए, यह देखना चाहते हैं कि मसीह की लड़ाई क्रूस की लड़ाई नहीं है अपितु यह एक मुकुट को प्राप्त करने या तलवार की लड़ाई है। पौलुस हमें इस तरह के आत्मिक मल्लयुद्ध के लिए मार्गदर्शन इफिसियों 6 में देता है। हमें प्रार्थना करना चाहिए। हमें शुभ सन्देश को साझा करना चाहिए। हममें विश्वास होना चाहिए। हमें धार्मिकता और परमेश्वर के वचन के मुख्य तरीकों में व्यवहार करना चाहिए... वास्तविकता तो यह है कि, मार्टिन लूथर ने अपने गीत "एक महान् गढ़" में ऐसा कहा है कि यह वह शब्द है जो कि पृथ्वी की सभी शक्तियों से ऊपर है। इसलिए, यह परमेश्वर का वचन है जो कि परमेश्वर के सेवक पुत्र, यीशु मसीह, के द्वारा, मसीह के आत्मिक मल्लयुद्ध की पूर्णता के द्वारा बना रहेगा। इसलिए, हमारे लिए उसका क्या यह अर्थ है कि हमें मसीह के नमूने का अनुसरण करना है, अर्थात् एक क्रूस-आधारित जीवन का होना। हम जैसा कि फिलिप्पियों 2 में कहा गया है कि स्वयं में वैसा ही स्वभाव रखते हुए उसकी नकल करें, ताकि सुसमाचार प्रतिष्ठित हो सके और मसीहियत अन्य धर्मों से भिन्न दिखाई दे, जो कि धर्म को मूलरूप से आक्रमक समझते हैं। यह एक सिद्धान्त है जो कि, ऐसा कहिए कि, मसीहियत और इस्लाम के मध्य में विरोधाभास है। इस्लाम परमेश्वर में एक न-आक्रमक विश्वास की धारणा नहीं सोच सकता है और मसीहियत मूलभूत रूप से ही क्रूस आधारित एक धर्म है, जो कि आत्म-स्वत्वहरण है, अर्थात् स्वयं के जीवन को अन्यों के लिए दे देना क्योंकि मसीह ने उसके जीवन को हमारे लिए दे दिया, इसलिए यह बलिदान के लिए बुलाहट है और मसीह के नमूने का अनुसरण करना है ताकि अन्य स्वैच्छा से उसे प्रभु के रूप में स्वीकार करने के लिए उसके पास आएं।**
>
> **-रेव्ह. माईक ग्लोडो**

न केवल नया नियम लड़ाई के विषय को हमारे युग के उदघाटन और इसकी निरन्तरता के साथ सम्बद्ध करता है, अपितु नई वाचा के युग के शिरो-बिन्दु के साथ भी।

जैसे स्वयं मसीह ने उसके प्रथम आगमन के समय लड़ाई का प्रदर्शन किया है, वही बुराई के विरुद्ध चल रही लड़ाई का अन्त भी उस समय पूरा करेगा जब वह अपनी महिमा में पुन: वापस आएगा। उसके दूसरे आगमन पर, जिस अन्तर को उसने बनाया था, अर्थात् आत्मिक शक्तियों को उसके प्रकोप के अधीन होने का और मानव प्राणियों का उसकी दया के अधीन होना, मन्द पड़ जाएगा। प्रकाशितवाक्य 19:11-15 में आने वाली लड़ाई का वर्णन इस तरह से दिया गया है:

मैं ने स्वर्ग को खुला हुआ देखा; और देखता हूँ कि एक श्वेत घोड़ा है; और उस पर एक सवार है, जो विश्वास योग्य, और सत्य कहलाता है; और वह धर्म के साथ न्याय और लड़ाई करता है... स्वर्ग की सेना श्वेत घोड़ों पर सवार और श्वेत और शुद्ध मलमल पहिने हुए उसके पीछे पीछे है। और जाति जाति को मारने के लिये उसके मुँह से एक चोखी तलवार निकलती है, और वह लोहे का राजदण्ड लिए हुए उन पर राज्य करेगा, और वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के भयानक प्रकोप की जलजलाहट की मदिरा के कुण्ड में दाख रौंदेगा (प्रकाशितवाक्य 19:11-15)।

कई तरीकों से, इस दृश्य में मसीह बुराई के विरूद्ध अन्तिम लड़ाई को नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में हमारी आशा और अनन्त जीवन के लिए कर रहा है। जब मृत्यु और पाप की अन्तिम हार हो जाएगी, तब मसीह राज्य करेगा और उसके सारे अनुयायियों को उसके साथ उसकी विजय में राज्य करने के लिए निमन्त्रण देगा।

बाइबल में लड़ाई का विषय, कदाचित् विशेष रूप से पुराने नियम का है, और परमेश्वर का न्याय और उसका प्रकोप और कैसे यह सब कुछ खुलता चला जाएगा और यह अन्तिम समय में कैसा दिखाई देगा, एक बड़ा विषय है...परन्तु नए नियम में हमारे पास दो भिन्न तरीके हैं जिसमें यह विषय विकसित हुआ है। पहले का लेना देना यीशु के साथ है। वह एक दिव्य योद्धा के रूप में पाप के विरूद्ध युद्ध करने के लिए आता है, परन्तु इस बार वह पापियों के विरूद्ध नहीं अपितु स्वयं पाप के विरूद्ध युद्ध करने के लिए आता है। वह कुछ अर्थों में वहाँ पर पीड़ित बन जाता है। वह ऐसा व्यक्ति बन जाता है जो कि परमेश्वर के प्रकोप को प्राप्त करता है, इसकी अपेक्षा कि वह जो प्रकोप को लेकर आता हो। अब, पापी परमेश्वर के प्रकोप से अन्त में स्वयं को मसीह में छिपाने के द्वारा या उसके साथ एक होने के द्वारा, क्योंकि वे ऐसे लोग थे जिन्होंने मसीह के प्रकोप का अनुभव किया था, बचा सकते हैं। इसलिए जब मसीह आएगा, तो वे उसके लोगों के साथ आएगा, और वह आने वाला है और उनके विरूद्ध युद्ध करेगा जिन्होंने पश्चाताप नहीं किया और न ही विश्वास में उसके साथ एक हुए हैं। और इस तरह से हम लड़ाई के इन चित्रों को कुछ भावों में इस्राएल और प्रतिज्ञात् भूमि में आई बाढ़ में, यहाँ तक कि अश्शूर और बाबुल इस्राएल के विरूद्ध लड़ाई को आरम्भ कर रहे हैं, को युगान्तकारी न्याय के चित्र के रूप में प्राप्त करते हैं। परन्तु ये वास्तविकता के वे सारे चित्रण हैं, जिसमें मसीह सच्चाई से हमारे लिए किन किन अनुभवों में से होकर गया। इस तरह से यहाँ पर दो चित्र दिखाई देते हैं : प्रथम परमेश्वर का अनुग्रह जिसके अधीन होकर वह इस लड़ाई और प्रकोप में गया और हमारे लिए इसके श्राप को अनुभव किया, परन्तु इसके साथ ही परमेश्वर का न्याय भी है। वह पुन: वापस आ रहा है और हर कोई जो उसके साथ एकता में नहीं आया वह इसी तरह के न्याय का अनुभव करेगा।

- डॉ माईल्स वॉन पेल्ट

हमें पूरे पवित्रशास्त्र में पाए जाने वाली लड़ाई की व्याख्या मसीह को एक विजयी योद्धा के रूप में महान् शिरो-बिन्दु के समय पुन: आगमन के आलोक में सदैव स्मरण रखना चाहिए।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

जिस तरह से नया नियम लड़ाई के विषय का निपटारा करता है, वह हमारे लिए निर्देशात्मक है, जब हम पवित्रशास्त्र को हमारे आज के दिनों में लागू करते हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए हमें हर समय व्यक्तिगत् रूप से तैयार रहना चाहिए क्योंकि नया नियम इन्हें विभिन्न तरीकों से विकसित करता है। तथापि, किसी भी बाइबल आधारित विषय को पूरी तरह से लागू करने के लिए, हमें अवश्य यह देखना चाहिए कि कैसे इसे मसीह में नई वाचा के उदघाटन, निरन्तरता और शिरो-बिन्दु अर्थात् इतिहास की पराकाष्ठा के आलोक में देखा गया है। यह बात कोई अर्थ नहीं रखती है कि हम किसी भी एक विषय की खोज कैसे आरम्भ करते हैं, चाहे हम पुराने नियम या नए नियम से ही क्यों न करें, मसीह के अनुयायी होने के नाते हम इन विषयों को हमारे जीवनों में इस बात की खोज करते हुए लागू कर सकते हैं कि ये कैसे नई वाचा के युग में तीनों अवस्थाओं में पूरे हुए हैं।

सारांश

आधुनिक उपयोग और नई वाचा के ऊपर इस अध्याय में, हमने उन तरीकों को देखा जिनमें मसीह में नई वाचा बाइबल के हमारे उपयोग को आधुनिक संसार में प्रभावित करनी चाहिए। हमने ध्यान दिया कि कैसे पुराने नियम की आशाएँ नई वाचा में पूर्ण होती हुई मसीह में हमारे इस नए युग के उदघाटन, निरन्तरता और शिरो-बिन्दु में दिखाई देती हैं। और हमने स्पष्ट कर दिया है कि कैसे पुराने और नए नियम के प्रत्येक विषय का उपयोग आधुनिक जीवन में नई वाचा की इन तीनों अवस्थाओं के अनुरूप होना चाहिए।

मसीह में नई वाचा कोई छोटा विषय नहीं है। इसकी अपेक्षा, यह पूरे इतिहास के लिए परमेश्वर के सभी उद्देश्यों की पराकाष्ठा है। और इसी तरह से, मसीह में नई वाचा इस बात को प्रभावित करती है कि हम कैसे बाइबल के प्रत्येक अंश को हमारे आधुनिक जीवन में लागू करते हैं। मसीह के अनुयायी होने के नाते, हमें पवित्रशास्त्र को परमेश्वर के मसीह में पूरे हुए उद्देश्यों की पूर्ति के आलोक में देखना चाहिए। हम पीछे की ओर मुड़कर देखते हैं कि मसीह ने पहले से ही क्या कुछ कर दिया है, हम उस ओर देखते हैं कि मसीह अब क्या कर रहा है, और हम आगे की ओर देखते हैं कि वह उस समय क्या कुछ पूरा करेगा जब उसका पुन: आगमन होगा। केवल तभी हम उचित रूप से पवित्रशास्त्र को हमारे आधुनिक संसार में नई वाचा के लोग होने के नाते लागू कर सकते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम